Rs. 10/-

Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 8, August 2014

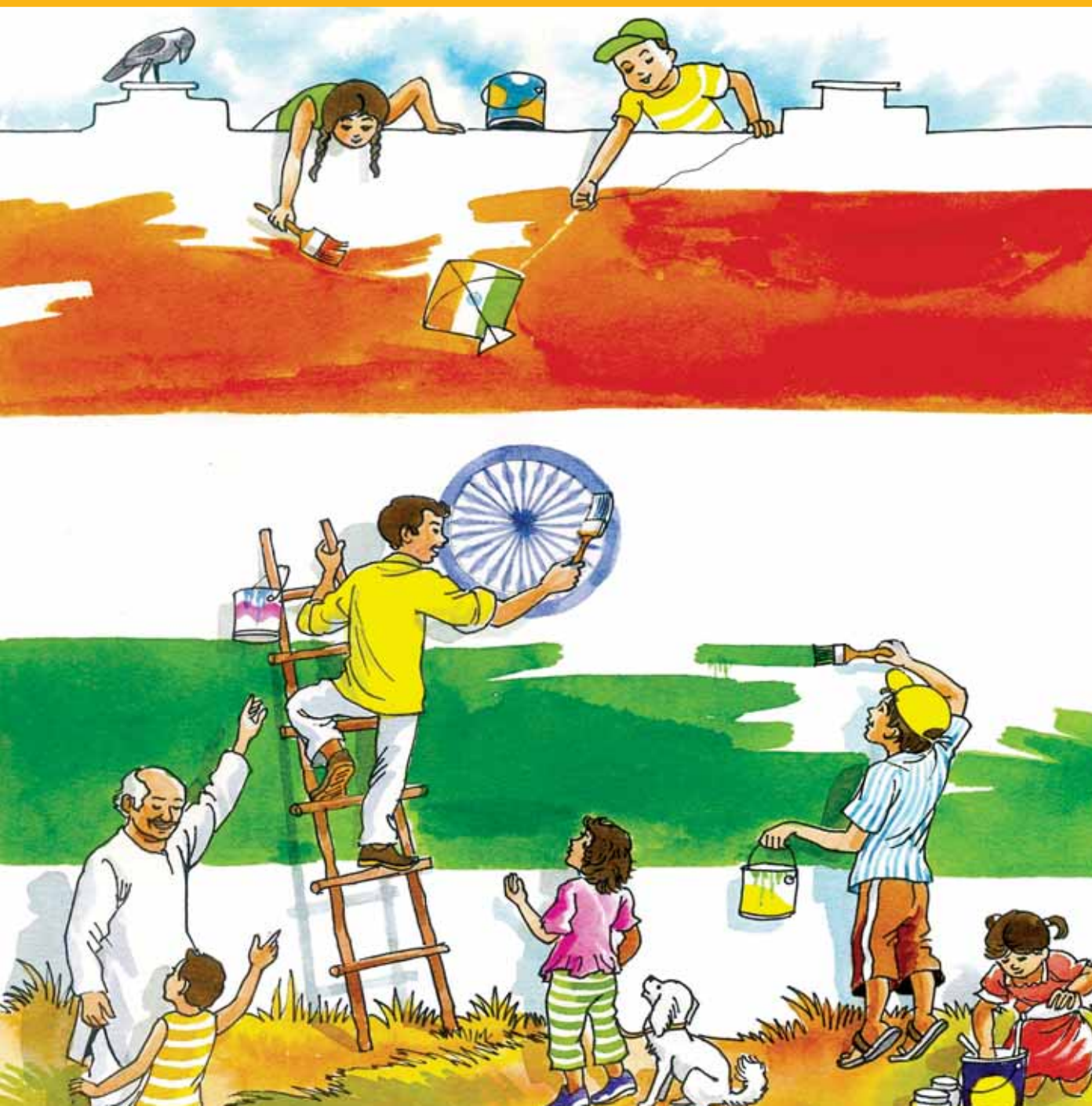

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 8, August 2014 **वर्ष 19, अंक 8, अगस्त 2014**

Editor / संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र

Assistant Editors / सहायक संपादकगण
Deepak Kumar Gupta
दीपक कुमार गुप्ता
Surekha Sachdeva
सुरेखा सचदेव

Production Officer / उत्पादन अधिकारी
Narender Kumar
नरेन्द्र कुमार

Illustrator / चित्रकार
Partha Sengupta
पार्थ सेनगुप्ता

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Typesetted & Printed at Pushpak Press Pvt. Ltd., 203-204, DSIDC Sheds, Okhla Ind. Area, Ph-I, N.D.-20

Contents/सूची

हम भारत की बेटी हैं	अज्ञात	1
सात समुंदर	डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी	2
I.N.A.'s Pledge ...	S.A. Ayer	5
बंदर की चतुराई	शुभम श्रीवास्तव	9
Undone By Greed	Hema Rao	12
ताबीज	नीलम चंद्रा	14
दो कविताएँ	उमेश चौरसिया	17
How the Lion Became...	Ratna Manucha	18
चिड़िया के बच्चे	डॉ. जगदीशचंद्र शर्मा	20
भाई-बहिन चलें स्कूल	महेश सक्सेना	21
Remembering Our ...	R. N. Kabra	22
मैं हरियल तोता	सामफेर	24
घर से भागी झाड़ू	प्रभात	25
मोर	कृष्णा रजक	27
Cities Versus Villages	Divyesh Lakhotia	28
मानवताप्रेमी अल्फ्रेड...	किरण बाबल	30
Interactive Storytelling Session ...		32

***Editorial Address*/संपादकीय पता**

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 10.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 100.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को नि:शुल्क वितरित किया जाता है।

स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर...

हम भारत की बेटी हैं

अज्ञात

हम भारत की बेटी हैं, अब उठा चुकीं तलवार
हम मरने से नहीं डरतीं
नहीं पीछे पाँवों को धरतीं
आगे ही आगे बढ़तीं
कस कमर हुईं तैयार
हम भारत की बेटी हैं, अब उठा चुकीं तलवार।

हम नए नहीं हैं लड़ाके
देखो इतिहास उठाके
हम क्षत्राणी भारत की
दिखला देंगी निज वार
हम भारत की बेटी हैं, अब उठा चुकीं तलवार।

जब कर किरपान उठातीं
फिर कालरूप बन जातीं
रुधिरों से प्यास बुझातीं
थर्रा देती हैं संसार
हम भारत की बेटी हैं, अब उठा चुकीं तलवार।

हम हरगिज दम न लेंगी
दुख-दर्द और कष्ट सहेंगी
दुश्मन को चीर धरेंगी
कह रहीं पुकार-पुकार
हम भारत की बेटी हैं, अब उठा चुकीं तलवार।

जब तक बाँहों में बल है
धमनियों में रक्त प्रबल है
दिल में नहीं पलभर कल है
बिना किए देश उद्धार
हम भारत की बेटी हैं, अब उठा चुकीं तलवार।

भारत की आजादी के लिए नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज की स्थापना की। स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं, की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए उन्होंने 'रानी झांसी रेजीमेंट' की स्थापना 24 अक्तूबर 1943 में की। इस रेजीमेंट का नेतृत्व कैप्टन लक्ष्मी सहगल ने किया। इस अवसर पर यह गीत रेजीमेंट के सदस्यों द्वारा गाया गया।

धारावाहिक उपन्यास
भाग : 17

सात समुंदर

पलायन

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

गायत्री स्विमिंग सीखने से कतरा रही है। स्विमिंग प्लेटफार्म से जब एक-के-बाद-एक बच्चे स्विमिंग पूल में कूद रहे हैं गायत्री कूदने के लिए एकदम तैयार नहीं है। वह घबराकर प्लेटफार्म से नीचे उतरने लगी। कुमारन और कोच दोनों चिल्ला उठे – गायत्री, तुम्हें क्या हो गया है? गायत्री के 'ना-ना' कहने के बावजूद दोनों ने उसे जबरदस्ती पानी में धकेल दिया। इस घटना के बाद वह गुमसुम रहने लगी। अब आगे की बात ...

रात हो चुकी थी। मंदिर में रात्रिकालीन आरती की घंटियाँ बज रही थीं। मस्जिद के पास इक्के-दुक्के नमाजी इकट्ठा हो रहे थे। एशा की नमाज अदा करनी थी।

शुक्ल पक्ष के निर्मल आकाश में तारे चमक रहे थे। पास के एक ताड़ के पेड़ के ऊपर बने चिड़िया के घोंसले से उनके पंख फड़फड़ाने की आवाज आ रही थी। मंद-मंद हवा से उनके पत्ते मस्ती में झूम रहे थे। तालाब से सोंधी-सोंधी महक आ रही थी।

घर में सभी लोग खाना खा चुके थे, इसी रात गायत्री ने ठान लिया कि वह कल सवेरे ट्रेनिंग में नहीं जाएगी। बहुत हो चुका, अब बस। भोर में उठना रहता है, इसलिए नारायणन रात को सबसे जल्दी-जल्दी खाना खाकर सोने को कहते हैं। रात के करीब बारह बजे होंगे। सारा घर चैन की नींद सो रहा था।

नारायणन के खर्राटे की आवाज पूरे घर में गूँज रही थी। तभी गायत्री एक चादर लेकर चुपके से दबे पाँव कमरे से निकल पड़ी। उस कमरे में दादी सो रही है। उधर, राजन

अच्चा और अम्मा के पास लेटा है। रसोई के बगल वाला पिछला दरवाजा खोलकर वह आँगन में आ गई। एक बार उसने पीछे मुड़कर देखा, फिर धीरे से चारदीवारी फाँदकर पहुँच गई पिल्लई के केले के बगीचे में। वहीं एक किनारे चादर ओढ़कर पड़ी रही, रात भर।

दूर कहीं एक कुत्ता भौंका, फिर धीरे-धीरे और भी 'भौं-भौं' की आवाज आने लगी। झींगुरों की 'झीं-झीं' शांत हो चुकी थी, रात भी लगी उबासी भरने। हवा में ठंडक थी, इमली की पत्तियाँ भी सिहरने लगीं। उनमें से छन-छनकर चाँदनी धरती के संग लुका-छिपी खेल रही थी। गायत्री केले के बगीचे में सो रही थी।

ज्यों-ज्यों पूर्व गगन में सूर्य सारथी अपने लाल घोड़ों को दौड़ाने लगे, रात ने कहा, 'चलो भाई, छुट्टी मिली!'

फिर से मंदिर की घंटियों की टुन-टुन... मस्जिद से अजान का स्वर... फजिर की नमाज ...चिड़ियों की चहक... खेत जाते बैलों के गले की घंटियों की ध्वनि... दुनिया जागने लगी।

इधर, सुबह होते ही मुर्गे की बाँग के साथ-साथ नारायणन का कंठ-स्वर सारे मुहल्ले में गूँजने लगा, ''अरे बहू, किसी को पता ही नहीं कि आखिर गायत्री गई कहाँ? रातोंरात अपने घर से ही लड़की लापता? अरे मणि, तू उठकर जरा देखता क्यों नहीं?''

दादी लगी विलाप करने, "अ-ई-ओ-देवा... हे कृष्णा...! तुमने हमें यह किस संकट में डाल दिया?" गायत्री की माँ अनंती, बेचारी चुपचाप सो रही थी। वह जो ठहरी घर की बहू! किसी से कहे तो क्या कहे? उसने मणि को जगाया, ''अजी सुनिए, गायत्री घर में नहीं है।''

''आँए!" पहले तो मणि को बात समझ में नहीं आई।

"गायत्री मिल नहीं रही है!''

''क्या कह रही हो?" मणि के होश उड़ गए। वह बिस्तर पर उठ बैठा। "बाबू जी के कमरे में देखा?''

''कहीं नहीं है।'' अनंती का गला रुँधने लगा। उसे याद आया कि कल गायत्री रोते-रोते घर वापस आई थी।

मणिशंकरन उठ खड़ा हुआ। उसे लगा, हो न हो गायत्री के गायब होने का इस तैराकी के साथ कोई संबंध अवश्य है। उसने पिता को कोसना आरंभ किया, ''छोटी बच्ची है, क्या-क्या करेगी? हरिपदम् से रोज अलेप्पी जाओ, घंटा-डेढ़ घंटा हाथ-पाँव चलाओ। कोई बच्चों का खेल है? फिर स्कूल...''

उधर, गायत्री का छोटा भाई बैठे-बैठे दूध के लिए रोने लगा। दादी अनंती को बुला रही थी। माँ आकर उसे सँभालने लगी।

नारायणन झल्ला उठे, ''अरे, तुम सब बैठे-बैठे केवल बक-बक करोगे या उसे ढूँढ़ निकालने के लिए कहीं चलोगे?''

मणि भी स्वयं को न सँभाल सका, ''सुबह-सुबह यह अच्छी मुसीबत है!''

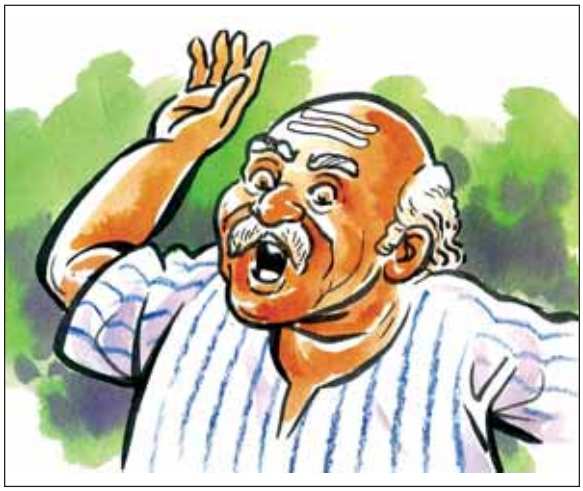

नारायणन घर से निकल पड़े।

रास्ते में इक्के-दुक्के लोग आ-जा रहे थे। किसी को फेरी पार करनी है तो कोई रबर-बगीचे का मजदूर है, तो कोई मछुआरा। नुक्कड़ की चाय की दुकान खुल चुकी थी, दो आदमी बैठे-बैठे कॉफी की चुस्की ले रहे थे। नारायणन ने आकर पूछा, ''अजी निलमपेरू, तुमने मेरी पोती गायत्री को देखा है?''

उसने सिर हिलाया, "क्या बात है सर?"

"अब पूछो मत, सुबह से गायब है। घर में सब कोई परेशान है।" वे आगे बढ़ जाते हैं।

लेकिन इतने सवेरे-सवेरे कौन उन्हें उनकी कुचुमोल का अता-पता बताता? बेचारे इधर से उधर भटक रहे थे, तभी रास्ते में उन्हें पिल्लई का माली मिल गया, "अरे मास्टर साब, आपकी पोती तो हमारे बगीचे में है!''

''तुम्हारे बगीचे में? वहाँ क्या कर रही है?'' वे अचरज में पड़ गए।

''सो रही है।'' वह हँसते हुए आगे बढ़ गया।

इस हँसी ने तो आग में घी का काम किया। दुर्वाशा की तरह क्रोध से तमतमाए नारायणन पिल्लई के बगीचे में पहुँचे। जानी-पहचानी चादर को देखते ही उनका पारा और चढ़ गया। उन्होंने झटके से चादर को खींच लिया, ''हमलोग तुझे सारी दुनिया में ढूँढ़ रहे हैं और तू यहाँ सो रही है?''

क्षण भर के लिए तो गायत्री सहमकर चुप रही, फिर फफककर रो पड़ी, ''दद्दा, मुझसे नहीं होगा। मैं स्विमिंग नहीं सीख सकती।''

''नहीं सीख सकती तो मत सीखो!'' जो काम नारायणन कभी नहीं करते, आज वही कर डाला। मारे गुस्से के वे चिल्लाने लगे। बात कहाँ से कहाँ पहुँच गई। वे अपने को सँभाल न सके। कसकर गायत्री के गाल पर एक तमाचा जड़ दिया, ''तो तू इस तरह घर से भाग जाएगी? तेरे लिए मैंने भी क्या कम कष्ट सहे? अरे, तुझसे यदि इस हरिपदम गाँव का नाम रोशन होता है तो मुझे क्या कम खुशी होगी?''

अब गायत्री रोई नहीं, स्तब्ध हो गई। उसके नन्हे-से सीने में एक व्याकुल-सा प्रश्न यहाँ से वहाँ सिर कूट-कूटकर आहें भर रहा था—'अप्पुपन ने मुझे मारा?'

सी-26/35-40ए
रामकटोरा
वाराणसी-221001 (उ.प्र.)

From NBT's Treasure Trove

I.N.A.'s Pledge Redeemed

S.A. Ayer

The hoisting of Indian National Flag on 16 August 1947 from Red Fort by Shri Jawaharlal Nehru, the first Prime Minister of India was a historic moment for each and every citizen of free India.

On the occasion of Independence Day of India on 15 August, we are producing a chapter on Indian National Army (I.N.A.) from the NBT book titled *Story of I.N.A.,* authored by Shri S.A. Ayer. In this chapter, the author has described the significance of this historical day for the soldiers of I.N.A. and the future of the soldiers of I.N.A.

August 16, 1947 was a highly emotional occasion for I.N.A. On that day, free India's first prime minister, Jawaharlal Nehru, hoisted the national tricolour on the ramparts of the Red Fort. The same day, the government of independent India officially released a picture of the historic occasion with the caption, 'In one of the most impressive ceremonies connected with the declaration of

independence, the national flag of free India was hoisted over the turreted battlements of the historic Red Fort of Delhi on August 16 by Pandit Jawaharlal Nehru while the old guard of the India National Army rallied to redeem an unfulfilled pledge.' The four-year-old pledge of the I.N.A. was to hoist the national tricolour on the viceroy's house in the civilian masses in east Asia who heard that pledge from Netaji's own lips, it was a sentimental dream; to old revolutionaries like Baba Amar Singh and Baba Osman Khan, it was aim; to the I.N.A. it was a military goal to be reached at any cost. Though beaten on the battle-field but wearing its sanctified I.N.A. uniform, a contingent of the I.N.A. personnel participated in the Red Fort function.

When all the excitement and hero-worship following the Red Fort trial died down, and independent India settled down to its new role of a free nation in the comity of nations, the I.N.A. found itself in the wilderness. When the wave of admiration for the I.N.A. was sweeping over the country, Sardar Vallabhbhai Patel, addressing a public meeting in Calcutta, said that the I.N.A. would form the nucleus of the army of independent India. But that was not to be. The I.N.A. Inquiry and Relief Committee, with Sardar Patel as president and Sri Prakasa as general secretary did its best to find employment for the rank-and-file of the I.N.A. But the I.N.A. was not absorbed in independent India's army. Its officers and men were told that they were free to apply for appointment *de novo*; in other words, they could all start at the lowest rungs of the ladder. The reason given was that otherwise there would "structural difficulties in the armed forces".

When the British started bringing the I.N.A. prisoners from east Asia into India at the end of the war, they classified them into three categories, namely, white, grey and black. Those who did not join the I.N.A. were white, those whom the British considered as misguided in joining the I.N.A. were labelled as grey and those who were aggressively unrepentant and would fight against the British again if they got a chance were marked as 'black' and dismissed from the Indian army and their arrears of pay and allowances were forfeited. The blacks, of course, were in an overwhelming majority, and the British wreaked their vengeance on these patriots who had caused the downfall of their empire in India.

The I.N.A. felt that this was a punishment for their patriotism. The central and state governments in independent India found odd jobs for I.N.A. officers and men, ranging from junior ministerships and ambassadorships to ranks in the Provincial Armed Constabulary. But the I.N.A. as a body was only fit for the army and it was not absorbed in the army.

An I.N.A. rally at Bombay in 1949 urged the Government of India to accept their sacred obligation to the families and dependants of the I.N.A. men who had laid down their lives in the war of liberation, and to the wounded and the disabled; the rally also urged the government to provide an opportunity to all ranks of the I.N.A. to serve free India by reabsorbing them in their proper ranks in the armed forces of India and to pay them their just dues.

Two years later, in April 1951, at a joint meeting of the All-India I.N.A. Inquiry and Relief Committee & the I.N.A. Advisory Committee at the Government of India secretariat in New Delhi, under the chairmanship of the prime minister, a memorandum on behalf of the I.N.A. was presented to the prime minister by the I.N.A. representatives. The memorandum referred to the fifteen thousand officers and men of the I.N.A. who had reached India from east Asia by the first quarter of 1946. Their arrears of pay and allowances since the fall of Singapore in February 1942 had been forfeited by the then British government of India. Since then about seven thousand of these

officers and men had managed to find some employment or other. The remaining eight thousand officers and men were destitute and in a pitiable plight. If the absorption of the I.N.A. in independent India's army was still considered impracticable, then the memorandum urged that as a symbolic gesture, five thousand jawans might be reinstated, obviating any structural difficulties that might perhaps follow the reinstatement of senior and junior officers. If even this was considered impossible, then the I.N.A. might be employed in the border police, the armed police, the ordinary police, intelligence, the home guards or customs and excise.

A melancholy but somewhat amusing sidelight on this conference was the presence of Colonel Gulzara Singh of the I.N.A. who was an ex-minister of the provincial government of Azad Hind, and one of the six trusted associates whom Netaji took with him upto Saigon on his last known flight and "adventure into the unknown". On reaching India, Colonel Gulzara Singh decided that he would only be a soldier in independent India also, and applied for a commission in the army *de novo* as lieutenant. He joined as a lieutenant, and as a lieutenant in independent India's army he attended the conference of the I.N.A. with the prime minister.

Two days after the conference, ministers of the Government of India including Rafi Ahmed Kidwai, N.V. Gadgil, C.D. Deshmukh, Hare Krushna Mahatab, and R.R. Diwakar were among the sixty guests at a dinner at the Constitution Club, New Delhi, hosted by Dr. Punjabrao Deshmukh, H.V. Kamath and Sonavane, members of parliament, to felicitate Major-General J.K. Bhonsle and others who had attended the joint I.N.A. meeting with the prime minister. Replying to the felicitations, General Bhonsle said it was the dynamic leadership of Netaji Subhas Chandra Bose that inspired the three million Indians in east Asia to give their all for the freedom of their motherland. The I.N.A. problem had been hanging fire for the previous five years; he and his colleagues felt that half the battle had been won when they prevailed upon the prime minister to accept the chairmanship of the I.N.A. Relief Committee. The remaining half of the battle could be won with the help of those present at the gathering, and the press and the public. He emphasised that the condition of the rank and file of the I.N.A. was extremely pitiable.

बंदर की चतुराई

शुभम श्रीवास्तव

एक बड़ा जंगल था। उस जंगल के किनारे एक बंदर रहता था। वह बंदर बहुत चालाक था। उसके पास थोड़ी-सी जमीन थी, जिसमें खेती करके वह अपना गुजारा करता था। बंदर ने कुछ भेड़-बकरियाँ भी पाल रखी थीं। दिन में आधा समय वह खेती करता और आधे समय में अपनी भेड़-बकरियों को हरी, मुलायम घास चरने के लिए ले जाया करता था। इस प्रकार उसके दिन बड़े मजे से गुजर रहे थे।

अपनी भेड़-बकरियों को वह बंदर कुछ ही दूर तक जंगल में चराने के लिए ले जाता था, क्योंकि वह डरता था कि कहीं कोई जंगली जानवर उनमें से किसी को मार न डाले।

एक दिन एक शेर घूमता-घामता जंगल के उस किनारे पर आ निकला, जहाँ बंदर रहता था। शेर ने उसकी मोटी-ताजी बकरियों को देखा तो उसके मुँह में पानी भर आया। शेर उनमें से कुछ को मारकर खा जाने का विचार करने लगा।

शेर चाहता तो सीधे बंदर के घर पर हमला करके उसकी भेड़-बकरियों को मार सकता था, लेकिन ऐसा करने की उसकी हिम्मत न हुई क्योंकि बंदर अपनी चतुराई और बुद्धिमानी के लिए प्रसिद्ध था। इसलिए शेर उन भेड़-बकरियों को खाने का कोई दूसरा उपाय सोचने लगा।

सोचते-सोचते अचानक शेर के दिमाग में यह विचार आया कि जब बंदर इन भेड़-बकरियों को चराने के लिए जंगल में ले जाए, तो इनमें से एक-दो को चुपके से मार डाला जाए। ऐसा विचारकर वह बंदर के पास पहुँचा। बंदर ने शेर को देखा तो नमस्ते की।

शेर ने नमस्ते का जवाब दिया और बात शुरू करते हुए बोला, "कहो बंदर भाई, क्या हाल-चाल हैं?"

बंदर ने नम्रता से जवाब दिया, "शेर भाई, ठीक-ठाक हूँ। कहिए, आज आप इधर कैसे आ गए?"

शेर बात बनाता हुआ बोला, "बस ऐसे ही घूमने चला आया था। तुम्हारी भेड़-बकरियाँ तो काफी तंदुरुस्त हैं। कहाँ चराते हो इन्हें? कल कहाँ चराने के लिए ले जाओगे?"

शेर के प्रश्न सुनते ही बंदर उसके मन की बात समझ गया। इससे उसका दिल काँप गया, लेकिन तुरंत ही उसने हिम्मत से काम लिया। यह जानते हुए कि शेर की नजर उसकी भेड़-बकरियों पर है, बंदर ने शांति से जवाब

दिया, ''कल तो मैं इन्हें तालाब के पास वाले मैदान में ले जाऊँगा भाई। वहाँ घास बहुत अच्छी है और बड़ी-बड़ी भी।

यह जानकर शेर अपने घर लौट गया। अगले दिन बंदर के पहुँचने से पहले ही शेर तालाब के पास की एक सघन झाड़ी में छिपकर बैठ गया। वह कल्पना कर रहा था कि बंदर वहाँ आएगा तो वह चुपके से उसकी एक-दो भेड़-बकरी को पकड़कर अपना ग्रास बना लेगा।

शेर को वहाँ इंतजार करते-करते शाम हो गई, लेकिन बंदर अपनी भेड़-बकरियों को लेकर वहाँ नहीं आया। यह देखकर शेर को बड़ा गुस्सा आया। वस्तुतः बंदर ने चालाकी की थी। शेर के मन की बात जानने के कारण ही उसने शेर को झूठ कह दिया था कि वह तालाब के पास वाले मैदान में जाएगा, जबकि उस दिन वह जंगल में किनारे की तरफ बने मंदिर के पीछे वाले मैदान में भेड़-बकरियों को चराने ले गया था।

गुस्से व निराशा से भरा शेर बंदर के पास पहुँचा, लेकिन मिठास भरे स्वर में बोला, ''बंदर भाई, तुम तो आज तालाब के पास वाले मैदान में आने वाले थे न, क्या बात हुई? आए क्यों नहीं?''

बंदर ने चतुराईपूर्ण उत्तर दिया, ''शेर भैया, मैं तो भेड़-बकरियों को लेकर उसी मैदान की ओर आ रहा था, लेकिन क्या करता? रास्ते में ही ये सब मंदिर के पीछे वाले मैदान की ओर मुड़ गईं। अब इनको वहाँ अच्छा लगा तो मैं वहीं चराने लगा।''

इधर-उधर की कुछ और बातें करने के बाद शेर ने पूछा, ''अच्छा, कल कहाँ ले जाओगे इन्हें?''

बंदर तो पहले से ही यह जानता था, इसलिए पूर्व निश्चित विचार के अनुसार वह बोला, ''भाई, कल तो नदी के किनारे वाले मैदान में जाने की बारी है। मैं इन भेड़-बकरियों को लेकर कल वहीं जाऊँगा।''

अगले दिन शेर नदी के किनारे जाकर छिप गया और बंदर व उसकी भेड़-बकरियों का इंतजार करने लगा। बंदर उस दिन उधर आया ही नहीं। वह शेर की चाल समझता था, इसलिए आज वह अपनी भेड़-बकरियों को तालाब के पास वाले मैदान में ले गया था।

शेर शाम तक बैठा वहाँ इंतजार करता रहा, लेकिन सब व्यर्थ गया। उसे बंदर पर बहुत गुस्सा आ रहा था। आज वह कुछ फैसला करना ही चाहता था, इसलिए अँधेरा होते ही वह बंदर के घर जा पहुँचा और बोला, ''आज तुम नदी के किनारे वाले मैदान में आए ही नहीं। मेरा एक दोस्त आया था। मैं उसे तुमसे मिलवाना चाहता था, इसलिए उसे लेकर वहाँ गया था। लेकिन तुम मिले ही नहीं।''

बंदर ने बहाना बनाते हुए कहा, ''शेर भैया, ये भेड़-बकरियाँ बड़ी शैतान हैं। नदी के किनारे

जाते-जाते ये तालाब के पास वाले मैदान की ओर चली गईं। मैं मजबूर हो गया।''

शेर इस प्रकार दो दिन से बंदर द्वारा बहकाया जा रहा था। उसे बहुत क्रोध आ रहा था, लेकिन किसी प्रकार वह अपने गुस्से को दबाए हुए था। मन में गुस्सा लिये हुए वह वहाँ से चल दिया, लेकिन घर जाने की बजाए वह बंदर की झोंपड़ी के पीछे जाकर छिप गया।

उसने सोचा कि बंदर के सो जाने के बाद रात के समय चुपके से आज इस बंदर की एक-दो भेड़-बकरी खा ही जाऊँगा।

बंदर ने शेर को छिपते देख हुए लिया था, किंतु उस समय वह कुछ नहीं बोला। बंदर खाना बनाने बैठा। खाना बड़ा स्वादिष्ट बन रहा था। बाहर छिपे शेर की नाक में खाने की सुगंध जा रही थी, जिससे उसका जी ललचा रहा था।

खाना बनाने के बाद बंदर ने दो थालियाँ रखीं और उनमें खाना परोसा। उसने शेर को आवाज दी, ''शेर भैया, बाहर क्यों छिपे बैठे हो? अंदर आ जाओ। खाना तैयार है, एक साथ खाएँगे।''

शेर यह सुनकर सकपका गया। वह समझ गया कि बंदर ने उसको छिपते हुए देख लिया है, इसलिए अब अंदर गए बिना कोई चारा नहीं था।

ऐसा सोचकर वह बंदर की झोंपड़ी के अंदर आ गया और एक थाली के सामने बैठ गया। शेर को आया देख बंदर प्रसन्न होने का नाटक करने लगा और बोला, ''शेर भैया, आज मैं तुम्हें अपने हाथ से खाना खिलाऊँगा।''

गुस्से से भरे शेर ने सोचा, ठीक है, जब यह मेरे मुँह में कौर डालेगा तो मैं इसको ही खा जाऊँगा। उसके बाद तो सारी भेड़-बकरियों पर मेरा ही अधिकार होगा। इसलिए वह बोला, ''बंदर भाई, जरूर खिलाओ।'' और उसने अपना मुँह खोल दिया।

बंदर बोला, ''ऐसे नहीं। तुम मुझसे बहुत प्रेम रखते हो तो पहले आँखें बंद करो। तब मैं तुम्हें खाना खिलाऊँगा।''

शेर ने तुरंत आँखें बंद कर लीं। बंदर इसी मौके की ताक में था। उसने चूल्हे से जलती लकड़ी निकाली और शेर के मुँह में डाल दी। शेर का मुँह जल गया। बंदर द्वारा अचानक किये गए इस हरकत से वह घबरा गया और वहाँ से भाग निकला। उसके बाद शेर फिर कभी भूलकर भी उधर नहीं आया।

अब बंदर अपनी भेड़-बकरियों के साथ आराम से रहने लगा।

सी-1/72, विशेषखंड
गोमती नगर, लखनऊ-226010 (उ.प्र.)

Undone By Greed

Hema Rao

Kundan lived in a small, dingy, brick house. Everyone thought Kundan was very poor.

This did not bother Kundan. He had saved money day after day. Now he had a tin box full of gold coins. In fact, poor Kundan was a very rich man!

"If everyone thinks I am penniless, no one will rob me!" thought Kundan, gleefully.

One day, Kundan's house caught fire. He managed to escape unhurt but could not drag out his precious tin box.

"Ohhhh!" wailed Kundan, "I have lost everything!"

"Poor man!" said his neighbour. "He only had a house. Now he has nothing!"

"It was an ordinary brick house," retorted another villager. "Why wail like that?"

The village folks were really puzzled. Kundan had only lost a roof on his head. He was wailing as if he had lost pots full of precious gold!

"There is more to this than what meets the eye!" thought Chandru, the

crafty money-lender. "I must find what is so valuable about that old house!"

He met Kundan and whispered into his ear, "What is inside your house? I'll run in and get it out!"

Kundan whispered back that a box full of gold coins was still inside the house.

"If I get it out for you, what will you give me?" whispered Chandru.

"Anything you want," said Kundan.

"I want some of the gold," said the cunning Chandru.

"Take it but give the rest to me," said Kundan.

"I will give you only what I want!" insisted Chandru.

"Ohhhhhh!" wailed Kundan, loudly. "Do as you wish…Ohhhhhh!"

Chandru rushed and bravely went into the burning house and brought out the tin box.

"What is in it?" asked the curious onlookers.

"Old clothes!" said Chandru.

"Are you mad to risk your life for that?" exclaimed a man.

"It matters to him," said Chandru.

"What a kind-hearted man!" said one and all. "We thought he only cared about money. But he also has a heart of gold!"

Chandru took Kundan and the box to his house. He tied up all the coins inside an old bed sheet. He then gave Kundan the empty box!

Kundan was very angry.

"I gave you what I wanted. That was the promise I made to you!" said cunning Chandru.

Kundan went to the Emperor Akbar. He narrated his tale of woe. The emperor did not know what to do. Chandru had given Kundan exactly what he had promised to do! Emperor Akbar summoned Birbal. He told him what had transpired between Kundan and Chandru.

"You had a box full of gold coins," said Birbal to Chandru. "What did you want — the box or the coins?"

"The gold coins," said Chandru,

"You promised to give Kundan what you wanted. So give back the gold coins to him!" ordered Birbal.

So greedy Chandru lost all the money he had cleverly taken from Kundan.

He was outwitted by someone much more cunning than him!

(Adapted from the Tales of Akbar and Birbal)

FF-2, Suraksha Comforts
19, 17th Cross, Padmanabha Nagar
Bangalore-560070 (Karnataka)

ताबीज

नीलम चंद्रा

सलिल को खेलने-कूदने का बचपन से ही बहुत शौक था, पर उसका सबसे प्रिय खेल था हॉकी। जब वह बहुत छोटा था, तब भी उसने अपने स्कूल में कई बार हॉकी के खेल में हिस्सा लेने की कोशिश की थी। परंतु उसके स्कूल के खेल-कूद के टीचर चौधरी सर को उसका खेल पसंद नहीं आया था और उसका कभी चयन नहीं हुआ था। उसकी हॉकी खेलने की इच्छा इतनी प्रबल थी कि वह घर के आसपास के अपने साथियों के साथ हॉकी खेलता रहता।

एक बार वह अपने किसी रिश्तेदार के घर गया हुआ था। उनके घर एक पीर बाबा आए हुए थे। उन्होंने उसे एक ताबीज बाँधते हुए कहा, ''बच्चे, यदि तुम्हारी कोई दिली तमन्ना हो जो पूरी नहीं हो रही हो तो तुम उसकी कामना करते हुए मेरा यह ताबीज बाँध लो। मेरा यह दावा है कि बीस दिनों में तुम्हारी वह इच्छा जरूर पूरी हो जाएगी।''

यूँ तो सलिल को पीर बाबा और ताबीज पर विश्वास नहीं था, पर अपने रिश्तेदारों का दिल

रखने के ख्याल से उसने सोचा कि ताबीज बाँधने में कोई बुराई भी तो नहीं है। उसको अपनी हॉकी खेलने की इच्छा भी याद आ गई। सलिल ने मन-ही-मन सोचा, 'काश, इस बार मुझे स्कूल में हॉकी टीम में जगह मिल जाए!' और उसने ताबीज बँधवा ली।

संयोग की बात थी कि एक हफ्ते बाद ही उस वर्ष की स्कूल की हॉकी टीम का चयन होना था। अनुभव और उम्र के साथ सलिल के खेल में भी परिपक्वता आ गई थी। सलिल गोलकीपिंग में बहुत अच्छा था और उनके स्कूल की टीम का पुराना गोलकीपर स्कूल छोड़ चुका था। उसका खेल देखकर उसके सर ने उसका चयन कर लिया।

टीम में सलिल का चयन उसके हुनर की वजह से हुआ था, पर उसे लगा कि उसका चयन पीर बाबा की उस ताबीज की वजह से हुआ है। अब तो उसने निश्चय कर लिया कि वह उस ताबीज को कभी नहीं निकालेगा। जब उसके अभिभावकों को यह बात पता चली तो उन्होंने उसे कई बार समझाया कि उसे ताबीज पर नहीं, खुद पर विश्वास करना चाहिए। पर वह सलिल के ताबीज पर भरोसे को नहीं डिगा सके।

उसके स्कूल की टीम खेल में उत्कृष्ट और उत्साही थी और सारे खिलाड़ियों के बीच तालमेल भी बहुत अच्छा था। अतः उसके स्कूल ने इस बीच कई मैच जीते। गोलकीपर होने के नाते सलिल का कार्य बड़ा ही चुनौतीपूर्ण था। और

वह हर तरह की चुनौती पर खरा उतर रहा था। उसके स्कूल की जीत में उसका बहुत बड़ा योगदान है, यह सब कहा करते थे। सलिल को हरदम लगता कि उसकी यह जीत उस ताबीज की वजह से ही है।

कुछ दिनों बाद राज्यस्तरीय हॉकी टीम का चयन होने वाला था। सलिल को अपने ताबीज पर पूर्ण भरोसा था। चयन के दौरान सभी सहभागियों को प्रशिक्षण कैंप में सात दिनों हेतु रहना था। रात को सोते समय सलिल की उसके दोस्त रौनक से बातचीत हो रही थी। सलिल रौनक से कह रहा था, "मुझे अपने ताबीज पर पूर्ण भरोसा है। जब तक यह मेरे साथ है, मेरी जीत सुनिश्चित है।" बातें करते-करते सब सो गए।

अगले दिन सलिल ने अपनी रोज की आदत के अनुसार सुबह अपने ताबीज को महसूस करने की कोशिश की। पर यह क्या? ताबीज नदारद था। सलिल ने उसे आस-पास ढूँढ़ने की काफी कोशिश की, पर उसे ताबीज कहीं नहीं मिला। अब उसका पूरा उत्साह ठंडा पड़ गया। उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि अब उसका चयन नहीं हो सकता है।

बड़े ही हतोत्साहित मन से वह खेल के मैदान में उतरा। ताबीज न होने पर उसका मन खेल में लग ही नहीं रहा था। चूँकि वह बेमन से खेल रहा था और ध्यान उसका अभी भी ताबीज में ही अटका हुआ था, विरोधी टीम ने कब बॉल गोलपोस्ट की तरफ लाकर गोल कर दिया, उसको समझ में ही नहीं आया। उसकी टीम के विरुद्ध एक गोल हो चुका था। अब तो उसका विश्वास और बढ़ गया कि यह हार ताबीज की वजह से है। वह एकदम निराश हो गया।

उसकी यह परेशानी रौनक जानता था। मध्यांतर में जाकर उसने चौधरी सर को सारी बातें बताईं। चौधरी सर स्थिति को समझते हुए सलिल के पास पहुँचे। उसके सिर पर हाथ रखते हुए बोले, "सलिल, मुझे पता चला है कि तुम्हारा ताबीज खो गया है जिसकी वजह से तुम उदास और निराश हो, पर मैं तुमको बताना चाहूँगा कि तुम एक बहुत अच्छे खिलाड़ी हो। कुछ सालों पहले तुम्हारा खेल में उत्साह तो था, पर परिपक्वता नहीं थी। एक अच्छे खिलाड़ी में यह बहुत आवश्यक है। इसीलिए तुम्हारा मैंने टीम में चयन भी नहीं किया, हालाँकि मैं यह जानता था कि एक-दो साल में तुम्हारे खेल में परिपक्वता भी आ जाएगी और मन-ही-मन निश्चय कर चुका था कि तुम्हें टीम में जरूर लूँगा। आज मुझे यह कहते हुए बड़ा फक्र है कि तुम हमारी टीम की जान हो। और यह सब तुम्हारे ताबीज की वजह से नहीं बल्कि तुम्हारी योग्यता, मेहनत और उत्साह की वजह से हुआ है। मन लगाकर खेलो तो जीत तुम्हारी ही होगी।"

तभी मध्यांतर खत्म होने का संकेत हुआ। सलिल चौधरी सर की बातों को ध्यान से सोचने लगा। उसने आखिर में निर्णय लिया कि मन लगाकर खेलने में कोई नुकसान भी तो नहीं है। जब सर को उस पर इतना विश्वास है तो उस विश्वास की खातिर ही सही, उसने एक बार फिर अपना पूरा ध्यान खेल की ओर लगा दिया।

तभी उसकी टीम ने लगातार विरोधी टीम के विरुद्ध दो गोल कर दिए। अब तो विरोधी टीम भी दुगुने जोश के साथ खेलने लगी। पर उनको चौगुने जोश वाले सलिल का सामना

करना पड़ रहा था।

सच्चाई यह थी कि जब सलिल ताबीज वाली बात बता रहा था, विरोधी टीम का कप्तान, जगन, वहाँ से गुजर रहा था। जगन शुरू से जानता था उस टीम को हराने में सबसे बड़ा खतरा सलिल ही है। उसने तुरंत एक योजना बनाई। जब सब सो गए तो उसने अपनी टीम से मनीष को वह ताबीज चोरी करके लाने के लिए भेज दिया था। मनीष ने बड़े आराम से उसे हासिल कर लिया था। अब वे लोग मान चुके थे कि सलिल को तो वे खेल के मैदान से बाहर ही हरा चुके हैं। जब पहला गोल इतनी आसानी से हो गया तो वे सब मन-ही-मन मुस्कुराए, पर मध्यांतर में न जाने क्या जादू हो गया था कि सलिल फिर जोश में आ गया था। उसके जोश ने जगन की टीम को डरा दिया था।

खेल के आखिरी पंद्रह मिनट बचे थे। तभी जगन की टीम को पेनाल्टी कॉर्नर मिल गया। अब सलिल की असली परीक्षा थी। विरोधी टीम भी इस मौके को चूकना नहीं चाहती थी। वो भी पूरे जोश में थी।

एक क्षण को सलिल के मन में जरूर आया कि उसके पास ताबीज नहीं है, पर फिर उसे चौधरी सर के जादुई शब्द याद आ गए और उसमें एक नई स्फूर्ति आ गई। उसकी चुस्ती और स्फूर्ति के आगे विरोधी टीम नहीं टिक पाई और सलिल की टीम जीत गई।

सलिल के लिए यह जीत सिर्फ खेल की जीत नहीं थी, यह तो उसके आत्मविश्वास की भी जीत थी। वह समझ चुका था कि किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए ताबीज की नहीं, आत्मबल, हुनर और जोश की जरूरत होती है। वह अपने आप को मुक्त महसूस कर रहा था।

जब वह कमरे में वापस पहुँचा, उसने देखा कि उसके बिस्तर पर उसका ताबीज और एक चिट्ठी रखी हुई है। पत्र में लिखा था, 'कल मैंने जब तुम्हारे और रौनक की ताबीज के बारे में बातचीत सुनी तो मुझे लगा कि यदि मैं तुम्हें ताबीज से अलग कर दूँ तो तुम अपने आप हार मान जाओगे और तुम्हारी टीम को हराना आसान हो जाएगा। मैंने जिंदगी में पहली बार यह गलत कार्य किया था और इसका नतीजा मैं भुगत रहा हूँ। तुम्हारे जोश के आगे मैं नतमस्तक हूँ। हो सके तो मुझे माफ कर देना।'

सलिल मुस्कुरा दिया। वो तो जगन का आभारी था कि उसने उससे ताबीज को अलग कर उसका आत्मबल बढ़ाने में मदद की थी।

सी-164, आर.डी.एस.ओ. कॉलोनी
मानक नगर, लखनऊ-226011 (उ.प्र.)

दो कविताएँ

उमेश चौरसिया

जंगल की सैर

आओ बच्चो, तुम सबको
जंगल की सैर कराते हैं
बंदर-गिलहरी-तोता-मैना
मिलकर शोर मचाते हैं।

हाथी जी चिंघाड़े तो
खरगोश निकलकर भागे।
हिरण तेजी से दौड़ पड़े
पीछे दो लोमड़ भागे।

घड़ियाल सो रहा धूप में
कछुआ भी नदी किनारे।
झाड़ी में है अजगर
बैठा साँप कुंडली मारे।

थुलथुल भालू दौड़ रहा है
उसे हो रही देर।
चीता गुफा में टहल रहा
दहाड़ रहा है शेर।

देश हमारा

करते हैं याद शहीदों को
आजादी की खुशी मनाते हैं
पंद्रह अगस्त को हर साल
स्वतंत्रता दिवस मनाते हैं।

इस दिन संविधान अपनाया
लोकतंत्र का पाया जस
छब्बीस जनवरी को मिलकर
मनाते हैं गणतंत्र दिवस।

जल-थल-वायु सेनाएँ अपनी
तनी हुई हैं शान से
दुश्मन आँख उठा न पाए
करते हैं रक्षा प्राण से।

केसरिया-श्वेत-हरे रंग का
झंडा तिरंगा प्यारा है
जन-गण-मन गाते हैं गर्व से
भारत देश हमारा है।

50, महाजन कॉलोनी, नागफनी
बोराज रोड, अजमेर-305001
(राजस्थान)

How the Lion Became King!

Ratna Manucha

Long, long ago, before God created man. He made animals. To begin with – he made only two big animals – an elephant and a lion and let them loose in the forest. Since the elephant and lion had nobody else to keep them company, they became very good friends. They played together, ate together and even bathed together every morning in the stream that flowed across the middle of the forest.

As time passed, the elephant and the lion began to get bored with each other.

God also felt that the forest was too vast for just two animals, so he decided to create some more animals for the forest. Soon, there were deer, rabbits, tigers, leopards, wolves, snakes, bears, monkeys and zebras giving company to the elephant and the lion.

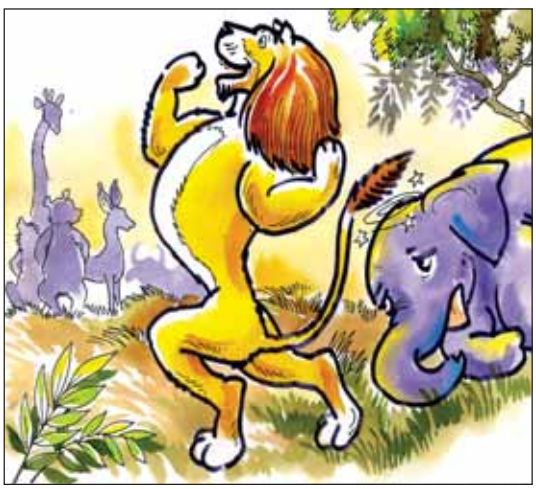

Now that there were so many animals with different thoughts and view points, there were many fights and many times the sounds of the animals fighting would echo throughout the forest. A wise old owl, watching from his tree hollow told the animals that the time had come for them to choose a king.

"You must have a king", he said. "Someone whom you look up to. Someone who will settle your quarrels and whose word is considered law in this forest." All the animals nodded in agreement. After all, he wasn't called the 'wise' owl for nothing! After a lot of discussion, the animals decided that since the lion and the elephant were the oldest and biggest animals in the forest, they should be asked to decide amongst themselves, who would be the king.

Accordingly, the elephant and the lion sat together and came to the conclusion that they would have a wrestling bout and whoever won would be declared the king of the forest.

Two days were given to the contestants to prepare for the final event. During these two days, the elephant and the lion were not to meet each other, so they both shook paws and went their separate ways – to the opposite ends of the forest.

The next morning dawned bright and clear. The lion was an early riser and he began to exercise so that he would be fit and strong for the competition. One – two, one – two, on and on, he went exercising and stretching himself till his bones ached with the strain.

At the other end of the forest, the elephant was busy too. He had stayed awake, all night long, wondering how to get enough strength for the match.

At last, he hit upon an idea.

"Of course!" he thought to himself, "why didn't I think of it earlier? The more I eat the more strength I'll get to wrestle with the lion!"

So, this morning, he was busy devouring all the banana trees in the forest! He ate and ate and ate, till his stomach started swelling alarmingly.

"Now I'll be strong enough to beat my good friend, the lion," thought the elephant satisfyingly and sat down to eat some more.

The great day finally arrived and all the animals gathered together to watch the big event. Suddenly there was a loud roar and out from the bushes, came the lion, flexing his muscles and advancing menacingly.

"Where's my friend, the elephant?" he growled. There was yet no sign of the elephant. The animals waited expectantly. All of a sudden, a rustling of trees was heard and there was the elephant, trundling along as slow as a snail and groaning with pain. The two best friends now stood face to face. The

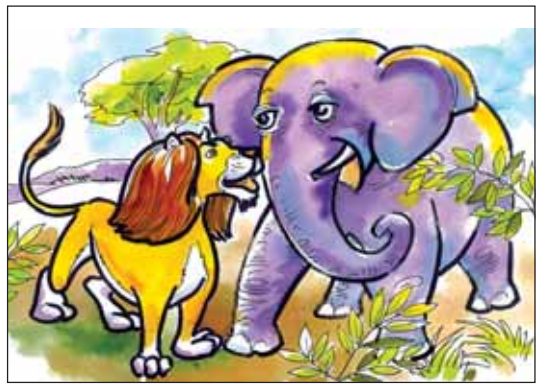

grizzly bear blew the whistle and the wrestling bout had begun!

"Ready, get set and go!" cried the monkey. Just one pounce and the lion had felled the mighty elephant with one blow. He jumped on the elephant and with one paw on his stomach, he waved the other paw triumphantly!

"I've won! I've won!" he cried amidst cheers and shouts from all the other animals.

The two friends shook hands and the elephant wonderingly asked the lion the secret of his success.

"Exercise!" was the lion's prompt reply. "Oooh!" wailed the poor elephant, "I thought the more I eat, the more strength I'll have so these past two days have been spent eating and sleeping in that order!"

So, that is how the lion was declared the king of the jungle. Had the mighty elephant, used his brains, then with his mix of brawn and brain, may be the elephant would have been the king!

6, Haridwar Road
Dehradun-248001 (Uttarakhand)

चिड़िया के बच्चे

डॉ. जगदीशचंद्र शर्मा

प्रभात छोटी कक्षा में पढ़ता है। उसके घर में अंगूर की बेल छाई हुई है। उस बेल पर दिनभर कई तरह के पक्षी और चिड़ियाँ चहचहाती रहती हैं। उसी अंगूर की बेल पर प्रभात की अम्मा ने पक्षियों के लिए पानी पीने का एक बरतन बाँध दिया। उसी के पास चुग्गा चुगने के लिए भी एक बरतन लटका दिया। दोनों बरतनों में सुबह-सुबह पानी और दाना-चुग्गा भर दिया जाता। चुग्गे के बरतन पर सूर्योदय के समय भाँति-भाँति के पक्षियों की भीड़ लग जाती। उनका चुगना, आना-जाना, उड़कर इधर-उधर बैठना और कलरव करना प्रभात को अच्छा लगता। वह उन्हें देर तक देखने में लीन रहता। चुगने के बाद कोई पक्षी पानी के बरतन में पानी पीकर उड़ जाते अथवा वहीं बैठ जाते। फिर दूसरे आते। यह क्रम देर तक चलता रहता। प्रभात को लगता कि सभी पक्षी उसके अच्छे मित्र हैं।

एक दिन बुलबुल के एक जोड़े ने अंगूर की बेल पर एक घोंसला बना दिया। कुछ दिनों बाद

घोंसले में तीन बच्चे चहचहाने लगे। वे कुछ बड़े होने पर घोंसले के बाहर भी झाँक लेते। उस समय प्रभात की प्रसन्नता कई गुना बढ़ जाती। उसने भी अपनी क्यारी में उन बच्चों के लिए एक छोटा-सा घर बना लिया। उसकी इच्छा थी कि बच्चे घोंसले से निकलकर यहाँ आएँगे और उससे बातें करेंगे, बतियाएँगे। उसकी उत्सुकता देखने योग्य थी।

चार-पाँच दिनों के बाद एक बच्चा घोंसले से उड़ान भरकर अंगूर की बेल पर जा बैठा। फिर अपने अम्मा-बापू के साथ उड़कर दूर चला गया। उसी तरह, दूसरा बच्चा भी उड़ता हुआ कहीं निकल गया। फिर तीसरा बच्चा घोंसले से उड़ान भरकर प्रभात के कंधे पर जा बैठा। प्रभात खुश हो गया। उसने ज्यों ही बच्चे की ओर हाथ बढ़ाया त्यों ही बच्चा वहाँ से उड़ गया। उड़ता हुआ वह धीरे-धीरे चल रहे छत के पंखे से टकराकर नीचे गिर पड़ा और चीखने-चिल्लाने लगा। प्रभात ने दौड़कर उसे उठा लिया। तब उसने बच्चे की चोंच में पानी की कुछ बूँदें डालीं। इससे उसे राहत मिली। वह स्वस्थ अनुभव करने लगा।

प्रभात उसे पुचकारते हुए अपने हाथों से सहलाता रहा। वह सोच रहा था कि बच्चे को क्यारी में बनाए गए उसके घर में बैठा दे। उसी समय, मौका पाकर बच्चा फुर्र से उड़ा और आसमान में ओझल हो गया। प्रभात खुशी से उछलने लगा। उसे प्रसन्नता हो रही थी कि बच्चे के प्राण बच गए।

गिलूंड-313207 (राजस्थान)

भाई-बहिन चलें स्कूल

महेश सक्सेना

खूब पढ़ो और लिखो
समय मत व्यर्थ गँवाओ
अपने-अपने माथे पर
शिक्षा का तिलक लगाओ।

मम्मी घर का काम सँभाले
मुनिया पढ़ने जाए
पढ़ने-लिखने वाली बिटिया
उन्नति करती जाए।

चला सर्वशिक्षा अभियान है
अब सबको है पढ़ना
अपनी-अपनी तकदीरों को
शिक्षा से है गढ़ना।

जीवन में पढ़ने वालों के
खिलते सुख के फूल
अपनी-अपनी मंजिल पाने
जाओ सब स्कूल।

नई चमक ले चेहरे पर
बिटिया जाएगी स्कूल
सुदृढ़ राष्ट्र को सुगढ़ बनाने
भाई-बहिन चलें स्कूल।

ई. डब्लू. एस.-9
नॉर्थ टी.टी. नगर, भोपाल (म.प्र.)

Remembering Our Freedom Fighters

R. N. Kabra

1. He shot Sir Curzon Wyllie. He was hanged on 16 August 1909. His supreme sacrifice received tremendous publicity in the world press creating sensation all over the British empire. Who was this brave freedom fighter?
2. Two newspapers, one in English and the other in Marathi became the most eloquent champions of the nationalist cause. He reorganized the Ganpati and Shivaji festivals. Who was this national hero behind all this and name the two newspapers?
3. Who composed the 'Vande Mataram' song?

Ashfaqulla Khan

4. Name the Indian who is known as the Father of Congress.
5. His last words before he was hanged were that he was very proud to be hanged as a first muslim for the cause of the Indian National Freedom Movement. Who was he?
6. Who unfurled the tricolour national flag on the banks of the Ravi proclaiming, "It was a crime against man and God to submit any longer to British rule."
7. In pursuance of Civil Disobedience campaign including non-payment of tax on salt etc. Gandhiji left Sabarmati Ashram with 78 select followers and marched to manufacture salt from the sea. What was this 200 miles march, to which place and on what date?
8. "Our nation is like a tree of which the original trunk was *Swarajya* and branches were *Swadeshi* and Boycott." Who wrote these lines and in which newspaper?
9. Name the freedom fighter who wrote *Gita Rahasya* while in Mandalay Jail?
10. Name the heroes of the famous Kakori train robbery case. Who were arrested and hanged? They were four, one of them was Pandit

Ram Prasad Bismil. Name the remaining three.

11. Three freedom fighters were sentenced to death. They regarded the gallows as garlands. They kissed the noose. One of them told the jailor,"You will kill us, but not the patriotism in us. The fragrance of freedom shall arise from our prayers." Who told this? Name the other two also.

12. In reality the British Government was determined to strengthen the bands of Hindu and Muslim communalists as part of their policy of '.....' Fill up the blanks.

13. Who was the great freedom fighter who formed an army to fight against the British? His slogans were 'Dilli Chalo,' and 'Give me blood, I will give you freedom?' Name the hero and the army.

14. Simon Commission was protested all over India. The national leader who was leading the demonstration in Lahore was severely lathi-charged by Superintendent of Police, Saunders. It meant his death. Who was this leader?

15. Who gave the slogan, 'Quit India' and when?

16. Who is know as the Bismarck of India? What is his contribution for the country?

17. On which date General Dyer of British army opened fire for 10 minutes on an unarmed gathering of men, women and children for *Baisakhi* festival. Officially 400 were killed, and 1100 wounded and 120 bodies were found in a well. A valiant son of India shot dead Dyer in London. What was the date and who was the brave national hero?

Answers

1. Madan Lal Dhingra
2. Bal Gangadhar Tilak, *Maratha* (English) and *Kesari* (Marathi)
3. Bankim Chandra Chatterjee
4. Dadabhai Nauroji
5. Ashfaqulla
6. Jawaharlal Nehru; 1 January 1930
7. Dandi March on 12 March 1930
8. Bal Gangadhar Tilak in *Kesari*
9. Lokmanya Tilak
10. Ashfaqulla; Rajendranath Lahari and Roshan Singh.
11. Bhagat Singh; Rajguru and Sukhdeo
12. Divide and Rule
13. Netaji Subhash Chandra Bose, Indian National Army
14. Lala Lajpat Rai *(Punjab Kesari)*
15. Mahatma Gandhi, 8 August 1942
16. Sardar Patel, Formation of Indian Union by merging the states
17. 13 April 1919; Udham Singh, 13 March 1940

A-438, Kishore Kutir
Vaishali Nagar
Jaipur (Rajasthan)

मैं हरियल तोता

सामफेर

मैं हरियल तोता आया
चोंच दाब मिर्ची लाया
क्या तुम इसको खाओगे?
सी-सी कर चिल्लाओगे?

अबकी जब मैं आऊँगा
पका आम ले आऊँगा
क्या तुम उसको खाओगे?
या घर को ले जाओगे?

और बताओ क्या लाऊँ
तुमको मैं खुश कर पाऊँ
अमरूदों का गुच्छा दें
या फिर सुनोगे टें-टें-टें?

सर्वोदय बाल विद्यालय
आनंद विहार
दिल्ली-110092

घर से भागी झाड़ू

प्रभात

एक रात एक झाड़ू यह सोचकर किसान के घर से भाग गई कि उसे वहाँ बहुत काम करना पड़ता है। भागी तो ऐसी भागी कि रात भर भागती रही। भागते-भागते उसने एक टीले पर ठहरकर आसमान की ओर झाँका। एक तारा टूटा। 'ओह, तारे की झाड़ू नीचे आ रही है! मैं इसके साथ ही रह लूँगी।' वह ऐसा सोच ही रही थी कि तारे की झाड़ू बीच में ही गायब हो गई।

उस झाड़ू का दुनिया के बारे में एक साफ सोच था। और वह सोच यह था कि एक तो वह हर बौनी झबरीली चीज को झाड़ू समझती थी और दुनिया के बारे में झाड़ू भाषा में ही विचार करती थी। उसे लगता था कि यह दुनिया झाड़ुओं के लिए ही बनी है। झाड़ू दुनिया के लिए बने हैं इस विचार में उसका विश्वास नहीं था, बल्कि कोई ऐसा कहता तो वह झगड़ लेती थी। ठीक

उनलोगों की तरह जो विचारों के लिए काम करने के बजाय विचारों के लिए झगड़ते हैं। बहरलाल।

तो वह आगे भागी। भागती रही, भागती रही। उसे नदी किनारे एक हाथी मिला। वह नदी में पानी पीकर लौट रहा था। चाँद की रोशनी में झाड़ू ने उसकी पूँछ देखी तो हक्की-बक्की रह गई और उसकी घिग्घी बँध गई। उसने ऐसी लंबी झाड़ू पहली बार देखी थी। वह हाथी की झाड़ू को हाथी के पीछे-पीछे जाती देखती रही और वह इस बात को सोचकर विस्मित होती रही कि कुछ अधिक लंबी झाड़ू को लाने-ले जाने के लिए कितना विशाल जीव इस धरती पर है। 'झाड़ुओं की खातिर बनी यह दुनिया कोई हँसी-ठट्टा नहीं है।' उसने ऐसा सोचा और सोचकर मुस्कुराई।

आगे दो सियार मिले। वे हरी घास के मैदान में खड़े रो रहे थे और मुँह से भक-भक आग निकाल रहे थे। झाड़ू यह देखकर सहम गई। बुरी तरह से डरने पर भी उसने सियारों की झबरी झाड़ू देख ली। सियारों की झाड़ू भी सियारों के पीछे लगी हुई थी। वह आगे भागी। आगे उसने नीलगायों का झुंड देखा। उनकी झाड़ू भी उनके पीछे लगी हुई थी।

जानवर तो उसने पहले भी देखे थे, लेकिन वे अपनी झाड़ू पीछे लटकाकर चलते हैं यह बात उसने जंगल में आकर ही जानी थी। 'एक इनसान ही ऐसा है जो झाड़ू को काम में लेकर एक ओर पटक देता है। अपने पीछे लटकाकर नहीं चलता। कहीं साथ घुमाने नहीं ले जाता।' झाड़ू ने अपने अनुभव से ऐसा नतीजा निकाला। रात आधी से अधिक बीत रही थी। वह भागती जा रही थी, भागती जा रही थी। टीला, मैदान, नदी, जंगल, खेत इन सबमें भागते हुए वह भटक गई। उसे यह समझ में आना बंद हो गया कि वह आगे जा रही है या पीछे लौट रही है। अगल में जा रही है या बगल में जा रही है। तभी उसके कानों में लाल कलंगीदार की मुँह-अँधेरे की बाँग सुनाई पड़ी। यह बाँग तो उसकी सुनी हुई थी।

लाल कलंगीदार की इस बाँग का अर्थ था—'रात अब थोड़ी ही और बाकी है।' अँधेरे को चीरते हुए वह झाड़ू एक ऐसी जगह में घुस गई जो आँगन जैसी थी। उसमें एक झोंपड़ी थी। तभी उसके कानों में अँधेरी झोंपड़ी से आती एक और आवाज पड़ी—"झाड़ू... झाड़ू... अरी, तुझे मैं कहाँ रखकर भूल गई हूँ!"

"मैं तो यह रही, मुर्गी के दड़बे के सामने!" झाड़ू के मुँह से रोज मुँह-अँधेरे में निकलने वाली आवाज निकल गई।

किसान औरत ने उसे टप्प से उठा लिया और आँगन बुहारने लगी।

* * *
* *
*

1/551, हाउसिंग बोर्ड
सवाई माधोपुर-322021
(राजस्थान)

मेरा पन्ना

मोर

कृष्णा रजक

रंगबिरंगा पक्षी हूँ मैं
सिर पर मुकुट सजाऊँ
बादल गरजे, बिजली चमके
सबको नाच दिखाऊँ
पास कोई आए तो भागूँ
फर-फर कर उड़ जाऊँ
अगर कहीं मैं पंख छोड़ूँ तो
तुमको खुश कर जाऊँ।

सर्वोदय बाल विद्यालय
आनंद विहार, दिल्ली-110092

My Page

Cities Versus Villages

Divyesh Lakhotia

Many years ago when there were no buildings, malls, proper roads, electricity, mechanical devices and gadgets like mobiles, televisions, computer, radios, etc., the people had to satisfy their needs with the use of natural things. A girl named Riya always thought about the future generation.

One day her mother fell ill. So Riya had to do all the housework as her mother was not able to do any work because of her sickness. At night she was very tired and went to sleep. She started dreaming that her father is taking her to the future generation. Riya asked her father, "What are these moving things?" Riya's father answered, "These are cars". Riya said, "Lot of smoke is coming out from these cars and is making the air polluted." Her father said "Yes, you are absolutely right. Cars make the air polluted."

Riya and her father walked a long distance and reached a factory. Her father said, "Do you see that building?" That is factory." Riya said, "So much smoke is coming out from the factory. It means that both cars and factory pollute the air." Her father said, "Yes, you are absolutely right."

They walked a little further and saw some people bursting fire crackers. Riya asked, "What are these people doing with fire?" Her father answered, "They are bursting fire crackers." Riya said, "Lot of smoke is coming out from these fire crackers."

Riya was not enjoying her journey. She was surprised to see that some people were cutting down trees. She asked her father, "Why are they cutting down trees?" Her father answered, "They are cutting down trees to build houses, tables and chairs." She said they should live in huts without table and chairs because by cutting down trees there will be less oxygen in the air.

She was surprised to see that garbage was thrown here and there. She asked her father, "Why is garbage thrown here and there?" Her father answered, "People have thrown garbage here and there as people of the new generation do not care to maintain a clean environment." She said, "Our village is better than city; no one pollutes the air, cuts down trees, and throws garbage here and there. She said that because of the pollution people are also suffering from various diseases. "Please take me to my village otherwise I will also be inflicted with these diseases."

"Riya wake up, you have slept enough," said her mother. Riya woke up from her bed and said, I saw a dream yesterday night where I had gone to see the future generation but I realize that my village is better than the city of future generation."

Sankalp-141, Iskcon Road
Mansarovar, Jaipur-302020
(Rajasthan)

चाहत

चेतना उपाध्याय

पढ़ना नहीं, हम बढ़ना चाहते हैं
लिखना नहीं, हम बोलना चाहते हैं
सीखना नहीं, हम सँवरना चाहते हैं
बंधन नहीं स्वच्छंदता चाहते है
पढ़े, लिखे, सीखे, बंधे बगैर हम
खुश हो जाते हैं, मगर
कुछ भी नहीं जान पाते
कि हम क्या चाहते हैं?

49 गोपालपथ, कृष्णविहार,
कुंदननगर, अजमेर-305001 (राजस्थान)

मानवताप्रेमी अल्फ्रेड नोबेल

किरण बाबल

'नोबेल' शब्द सुनते ही मन में एकदम से यह विचार कौंध जाता है कि इस वर्ष 'नोबेल पुरस्कार' किसे मिला?

साथ-ही-साथ, गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का भी स्मरण हो आता है, क्योंकि भारत के सर्वप्रथम वही नागरिक थे जिन्होंने 'नोबेल पुरस्कार' पाकर विश्वभर में भारत का नाम गौरवान्वित किया। रवींद्रनाथ टैगोर के बाद देश में और भी विभूतियाँ हुईं जिन्हें नोबेल पुरस्कार मिला। जैसे, मदर टेरेसा, सी.वी.रमन, डॉ. हरगोविंद खुराना, चंद्रशेखर और सुब्रमण्यम। अभी कुछ वर्ष पहले भारत के प्रख्यात अर्थशास्त्री डॉ. अमर्त्य सेन को भी नोबेल पुरस्कार मिला।

मगर इस पुरस्कार को शुरू किसने किया?

इसके बारे में कभी ध्यान ही नहीं गया। या यूँ कहिए, बहुत कम लोगों को इसकी जानकारी है।

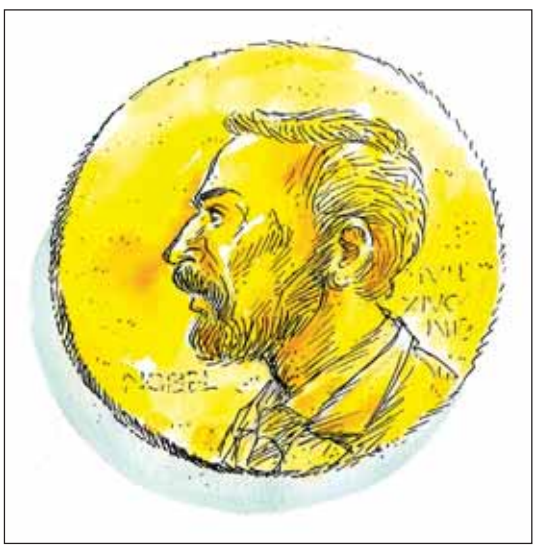

जी हाँ, अल्फ्रेड नोबेल वह व्यक्ति हैं, जिन्होंने इस विश्व-प्रसिद्ध नोबेल पुरस्कार की परिकल्पना कर उसे साकार रूप दिया। उनके मरणोपरांत, कई वर्षों बाद, 1901 में पहला नोबेल पुरस्कार दिया गया। तब से लेकर आज तक यह विश्व का सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार बना हुआ है।

3 सितंबर, 1864 को छपी एक गलत खबर ने सारे विश्व को चौका दिया था—

'खतरनाक विस्फोटक बनाने वाले अल्फ्रेड नोबेल की उसके ही एक कारखाने में विस्फोट होने से मौत। मौत का सौदागर स्वयं मौत की चपेट में आ गया।'

यह खबर स्वीडन के एक समाचार पत्र में विस्फोट के बाद छपी थी। समाचार पत्र में उनके भाई एमिल की जगह गलती से अल्फ्रेड का नाम छप गया था।

इस खबर ने अल्फ्रेड के मन को झकझोर दिया। अपने आप को मौत के सौदागर के रूप में याद किया जाना उनके अंतर्मन पर एक गहरी चोट से कम न था। और यहीं से उनका हृदय परिवर्तन हुआ। अपार धन-संपत्ति को उन्होंने मानव-कल्याण हेतु लगाने का निश्चय कर लिया। और यहीं से शुरू होती है नोबेल पुरस्कार की कहानी।

विस्फोटक तकनीक में क्रांति लाने वाले, डायनामाइट के निर्माता, अल्फ्रेड नोबेल अपने आप को एक साधारण व्यक्ति मानते थे। इनका जन्म 21 अक्तूबर, 1833 को स्वीडन के स्टॉकहोम में एक इंजीनियर परिवार में हुआ था। दुर्भाग्यवश,

अल्फ्रेड के जन्म के साथ ही उनके पिता, इमैनुअल नोबेल का दिवाला निकल गया। इसलिए माता-पिता का जीवन बड़ा ही संघर्षमय रहा।

इस कठिन समय में इनकी माँ एंडरेट अहिसैल परचून की दुकान खोलकर घर का गुजारा चलाती थी। इन कठिन परिस्थितियों के कारण अल्फ्रेड और उनके तीन भाइयों ने घर पर शिक्षा पाई।

जीवन के नैतिक मूल्यों व ईमानदारी के संस्कार अल्फ्रेड ने अपनी माँ से पाए। प्रतिभा व कार्यकुशलता बेशक पिता से पाई थी, पर उनकी आत्मा में माँ बसी थी। वह दुनिया के किसी कोने में होते, अपनी माँ का जन्मदिन मनाने आजीवन स्वीडन आते रहे।

अल्फ्रेड का जीवन किसी रोमांचकारी कहानी से कम नहीं है। 17 वर्ष की अल्प आयु में वह पाँच भाषाएँ धाराप्रवाह बोलने लगे थे। कैमिकल इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त कर उन्होंने विस्फोटक रसायन को ही अपना कार्यक्षेत्र बना लिया।

पिता के निर्माण कार्य में होने के कारण अल्फ्रेड का विस्फोटक से परिचय बचपन से ही था। वे नाइट्रो ग्लिसरीन को सुरक्षित रूप से व्यवहार में लाने के लिए जुट गए।

अल्फ्रेड अपने तीन भाइयों के साथ पिट्सबर्ग में धंधे को जमाने में लग गए। 1860 के दौरान वह कई जोखिम भरे प्रयोग करते रहे। आखिर 1863 में अल्फ्रेड को उस विस्फोटक के लिए पेटेंट मिल गया जिसका नाम 'ब्लास्टिंग आयल' रखा गया।

अल्फ्रेड निरंतर प्रयोग करते रहे। डायनामाइट की उपलब्धि इन्हीं की देन है। अल्फ्रेड केवल शोधकर्ता या आविष्कारकर्ता नहीं थे वे व्यापार और कंपनी कारोबार में भी कुशल थे। केवल कम्पनियाँ खोलकर और उत्पादन प्रारंभ कर वे चुप नहीं बैठते, अपितु हर कंपनी की प्रयोगशाला में सुधार-परिष्कार करते रहते। धमाकों से जान-माल की हानि न हो इसका उन्हें खास ख्याल रहता। अपनी कर्मठता और प्रयोगशीलता के कारण अल्फ्रेड के नाम 355 पेटेंट हैं।

अल्फ्रेड नोबेल का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वह डायनामाइट के आविष्कारक होने के साथ-साथ, वैज्ञानिक, रसायनशास्त्री, इंजीनियर, शस्त्र निर्माता उद्यमी, लेखक व शांतिवादी भी थे। उनके लिए दिन में 15-20 घंटे काम करना आम बात थी।

अल्फ्रेड प्रायः इस बात से निराश रहते थे कि उनके आसपास के परिवेश से जुड़े लोग उचित मूल्यों का निर्वाह नहीं कर पाते थे। सभी का अपना लालच बना रहता था, इसी कारण वह किसी पर विश्वास नहीं कर पाते थे।

वैसे, कितने विरोधाभास की बात है कि जो व्यक्ति खतरनाक विस्फोटकों को अपने जीवन का आधार बनाता है, आगे चलकर वही 'शांतिदूत' और 'शांति का मसीहा' बनता है और जिनके नाम पर विश्व के सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार की शुरुआत होती है।

अल्फ्रेड नोबेल के जीवन पर दृष्टि डालने से समझ आता है कि वह एक मानवतावादी एवं कर्मठ, उदार व भावुक व्यक्ति थे, लेकिन उनका अपना जीवन सुखी नहीं था। उन्हें परिवार का सुख कभी नहीं मिला। अपनी मृत्यु के समय वह एकदम अकेले थे। इस एकाकी, किंतु भावुक, उदार और दयालु नोबेल ने अपनी धन-संपत्ति का उपयोग विश्व-कल्याण के लिए ऐसे क्षेत्रों में किया जहाँ उनका नाम शताब्दियों तक सम्मान से लिया जाएगा।

krn8586@gmail.com

Interactive Storytelling Session for School Children

In its relentless efforts to promote reading habit in the country especially among the children, National Centre for Children's Literature (NCCL), organised an interactive storytelling session for school children with Ms Kusumlata Singh, author and Shri Partha Sengupta, illustrator of the recently published NBT title for children titled *Phir Khil Gaye Phool* at NCCL Library in Nehru Bhawan, Vasant Kunj, New Delhi on 25 July 2014.

In response to children's queries, Ms Kusumlata Singh told the children that she started writing during her school days. She said that she had been an avid reader and the habit of reading helped her pen down her thoughts. She said that she got an idea to write this book when she went out for the morning walk. Shri Partha Sengupta talked about the illustrations used in the book. He said that the minute details about characters of a story given by the author helps illustrator create illustrations . He added that illustrator also uses his imagination and creativity to make his work attractive. The children showed keen interest in the session. The session was coordinated by Shri Manas Ranjan Mahapatra, Editor (NCCL). The children also visited the NBT Bookshop and got the copies of the book autographed by the Ms Kusumlata Singh and Shri Partha Sengupta.

At the outset, Dr M A Sikandar, Director, NBT welcomed the author, illustrator, participating children and others present on the occasion. He talked about various activities undertaken by the Trust to promote reading habit and urged children to read more and more books. On this occasion, the students presented small saplings to the guests to create awareness about environment.

Book Review

जल : बड़ा आकर्षण

पानी के संबंध में संक्षेप में, किंतु काफी जानकारी है इसमें। पानी क्या है, यह कहाँ से आता है, पानी की जाँच, जल-चक्र, जल शक्ति, पानी की सफाई, जल-संरक्षण आदि विविध पहलुओं पर प्रामाणिक जानकारी दी गई है। स्नानघर और रसोईघर में हम पानी की कैसे बचत कर सकते हैं इसके बारे में बताया गया है। पुस्तक रंगीन और आकर्षक है। इस पुस्तक को पुनःचक्रित कागज पर प्रकाशित किया गया है।

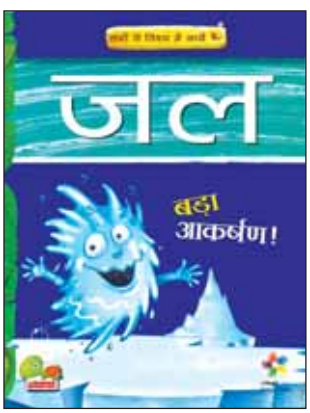

जल : बड़ा आकर्षण
विजिता मुखर्जी
द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (टेरी)
पृ. 16

फिर खिल गए फूल
कुसुमलता सिंह
चित्रः पार्थ सेनगुप्ता
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
पृ. 16 ₹ 35.00

फिर खिल गए फूल

जंगल में फूल खिले हैं—रंग-बिरंगे, ढेर-ढेर फूल। एक दिन वहाँ पहुँच गया एक चोर, जिसे फूलों से बेहद नफरत थी। उसने जंगल से फूलों को तोड़ा और उन्हें बाँध लिया एक गठरी में। छोटी फुदकी चिड़िया यह देखकर दुखी थी और वह फूल-चोर को पकड़वाने के जतन में लग गई। कठफोड़वा ने उसकी बात सुनी, कुछ विचारा और सूख चुके इन फूलों को गठरी में बाँधकर ले जा रहे चोर का पीछा किया। उसने गठरी में चोंच मारकर छेद कर दिया। फूल के बीज बिखर गए और वर्षाजल का स्पर्श पा फिर से खिल उठे। सारे जंगल में फिर से फूल-ही-फूल थे।

R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date: 20/21 Same Month
Date of Publication: 14/08/2014

HELP ME HOIST THE FLAG ON TOP OF THE FORT!